गिरजाशंकर भगवान् जी बधेका के शैक्षिक विचारों का विवेचनात्मक अध्ययन

देबकी सिरोला, [1](शोधार्थिनी), अमिता शुक्ला [2] (प्रोफेसर),
[1, 2] शिक्षा संकाय, कु वि वि एस एस जे परिसर, अल्मोड़ा।
Email - sirolad7@gmail.com

सारांश–देश के अग्रणीय बाल शिक्षाविद् गिरजाशंकर भगवान् जी बधेका, जिन्हें लोग प्रेम और सम्मान से गिजुभाई कहते हैं। उन्होंने बाल शिक्षण में मोंटेसरी पद्धति के सिद्धान्तों को भारतीय संदर्भ में स्थापित कर बच्चों की जरूरतों, स्तर, रूचि तथा आयुवर्ग के अनुसार शिक्षण की अनेक रोचक गतिविधियों का सूत्रपात किया। बच्चों को दबाव और भयमुक्त वाावरण प्रदान कर विद्यालय को आनन्दालय का स्वरूप प्रदान किया। गिजुभाई शिक्षा को जीवन–व्यापी प्रक्रिया मानते हैं। उनके अनुसार–''शिक्षा अन्तरात्मा की भूख है। इस प्रवृत्ति का उद्गम हमारे भीतर है। कोई आदमी किसी को सिखा नहीं सकता। शिक्षा विकास है, और विकास की आधारशिला है अनुभव। अनुभव स्वतंत्र क्रिया में निहित है, अतः बालक को स्वतंत्र वातावरण प्रदान करें। स्वतंत्र वातावरण का अर्थ है भयमुक्त वातावरण जो मोंटेसरी पद्धति में निहित है। गिजुभाई दूर–दृष्टा थे। उन्होंने बालक के विकास को निकटता और सूक्ष्मता से देखा था। बालकों की आवश्यकताओं, रूचियों और शक्तियों को ध्यान में रखकर अनेक प्रयोग किये थे। अमनोवैज्ञानिक तरीके से चलने वाले विद्यालयों के बारे में वो कहते थे–''इन जेल खानों से अपने शिशु को बचाइए''। वर्तमान में भी ये जेलखाने अंग्रेजी माध्यम के पब्लिक स्कूलों के नाम से देश के कोने–कोने में व्याप्त हैं, जहाँ हमारे बच्चों से उनका बचपन छीना जा रहा है। गिजुभाई ने ये विचार बीसवीं शताब्दी में ही नूतन शिक्षण के रूप में प्रस्तुत किया था, जो आज इक्कीसवीं शताब्दी में भी उतने ही प्रासंगिक हैं।

विषय–संकेत :– गिजुभाई के दार्शनिक, शैक्षिक विचार एवं उपादेयता ।

प्रस्तावना :

शिक्षा समाज की विसंगतियों एवं बुराइयों को दूर करने का साधन है, जो समाजोन्नति के लिए आवश्यक है। हमारी वर्तमान शिक्षा व्यवस्था कैसे नागरिकों का निर्माण कर रही है और कैसी व्यवस्था बना रही है यह आज सबके सामने है। अगर देश में भ्रष्टाचार, आतंकवाद एवं जातिवाद या कोई और समस्या है तो इन सबके मूल में शिक्षा व्यवस्था ही है। शिक्षा बालक का सर्वांगीण विकास कर उसे तेजस्वी, बुद्धिमान, चरित्रवान तथा सुयोग्य नागरिक बनाकर उसमें उच्च आदर्शों, आकाँक्षाओं, विश्वासों, संस्कारों एवं नैतिक मूल्यों का समावेश इस प्रकार करती है, जिससे उसके हृदय में देश–प्रेम व आत्म–त्याग की भावना प्रज्ज्वलित हो। जब ऐसी भावनाओं तथा आदर्शों से युक्त बालक देश सेवा का संकल्प लेकर मैदान में आयेंगे तो वर्तमान समय में चल रही अनेक समस्याओं का समाधान स्वयं हो जाएगा और देश निरन्तर उन्नति की ओर अग्रसर होगा।

किसी भी समाज और देश के लिए बच्चे उसके भविष्य होते हैं। बाल–जीवन की बुनियाद जितनी अच्छी होगी देश का भविष्य भी उतना ही अच्छा होगा। इस तथ्य को पहचान कर देश के बचपन को सँवारने वाले और बालकों को एक खुशहाल बचपन एवं सुनहरा भविष्य प्रदान करने वाले देश के अग्रणीय बाल–शिक्षाविद् गिरजाशंकर भगवान् जी बधेका का जन्म 15 नवम्बर 1885 को सौराष्ट्र गुजरात के चित्तल गाँव में हुआ था। लोग उन्हें प्यार से गिजुभाई कहकर पुकारते थे। परिणामतः इसी नाम से विख्यात हो गये। गिजुभाई बालकों के हृदय की गहराइयों को माप कर शिक्षा व्यवस्था में अभूतपूर्व परिवर्तन करने वाले पहले भारतीय शिक्षाविद् थे। उनका वकालत छोड़कर बाल–शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने का कारण मनोवैज्ञानिक था। उन्होंने अपने बचपन में जिस प्रकार की शिक्षा प्राप्त की थी उसका अनुभव यातनापूर्ण था। उन्हें अपने बचपन में शिक्षा प्राप्ति के दौरान डाँट–डपट तथा मारपीट सहन करनी पड़ी थी। इन्ही कटु अनुभवों ने उन्हें बाल शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने की प्रेरणा दी।

गिजुभाई ने मोंटेरी पद्धति का गहन अध्ययन किया और उसके सिद्धान्तों को भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल रूपान्तरण किया। उन्होंने अपने शैक्षिक विचारों को मूर्त रूप देने के लिए 1920 में बाल–विद्या मन्दिर की स्थापना की तथा शिक्षा के क्षेत्र में नये–नये प्रयोग किये। वो बालकों को पुस्तकीय ज्ञान के साथ–साथ सांस्कृतिक, व्यावहारिक एवं गुणवत्तापरक शिक्षा प्रदान करते थे। भावनगर की दक्षिणामूर्ति विद्यार्थी भवन उनकी साधना स्थली थी। उन्होंने सन् 1936 से 1938 तक जीवन का प्रत्येक क्षण बालकों से बातचीत करने, उनके मन को समझने, उनकी व्यथाएँ सुनने, समाधान करने और विभिन्न शैक्षिक गतिविधियों के माध्यम से जीवन–शिक्षा के उपयोगी पाठ पढ़ाने एवं विविध रचनात्मक कार्यों के आयोजन में बिताये। सन् 1938 में अध्यापकों को बाल–शिक्षण के नूतन सिद्धान्तों एवं विधियों का प्रशिक्षण देने के लिए राजकोट में अध्यापन मन्दिर स्थापित किया, जो शिक्षा के क्षेत्र में उनका अन्तिम योगदान था। निरन्तर अथक परिश्रम के कारण उनका स्वास्थ्य अचानक खराब हो गया और 23 जून 1939 को मात्र 54 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया।

सम्बन्धित साहित्य :

बलहारा, अजय (2007), के द्वारा अपना शोधकार्य ''गिजुभाई बधेका का शैक्षिक चिंतन एवं आधुनिक भारतीय बाल शिक्षा के परिदृश्य में इसकी प्रासंगिकता का अध्ययन किया गया। प्रस्तुत अध्ययन से निष्कर्ष निकाला गया कि शिक्षा की प्रक्रिया का केन्द्र बिन्दु बालक है। शिक्षक के द्वारा उसके बांछित विकास के अनुकूल वातावरण उत्पन्न किया जाना चाहिए। बालक की शारीरिक, मानसिक व हार्दिक इन तीनों वृत्तियों का सृजनात्मक पोषण ही शिक्षा का कार्य है।

अध्ययन के उद्देश्य : प्रस्तुत अध्ययन को सम्पन्न करने के लिए अग्रलिखित उद्देश्य निर्धारित किये गये हैं।

1–गिजुभाई के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना।
2–गिजुभाई के दार्शनिक विचारों का अध्ययन करना।
3–गिजुभाई के विचारों की वर्तमान संदर्भ में उपादेयता का अध्ययन करना।

शोध–प्रविधि :

प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक विधि का प्रयोग किया गया है, जो प्राथमिक एवं गौण स्त्रोतों के विवेचनात्मक अध्ययन पर आधारित है। प्रस्तुत शोधकार्य को और उपयोगी बनाने की दृष्टि से गिजुभाई से सम्बन्धित अधिकतम साहित्य को प्रयोग में लाने का प्रयास किया गया है।

गिजुभाई के दार्शनिक विचार :

गिजुभाई ने न किसी दर्शन का प्रतिपादन किया और न किसी दर्शन की व्याख्या की पर जैसा कि हर दार्शनिक का अपना एक चिंतन होता है, जो उसके अपने स्व–अनुभवों पर आधारित होता है। उसी तरह गिजुभाई का भी एक अपना दर्शन था, जो बालकों की समस्या पर केन्द्रित था। उनका दर्शन बाल–केन्द्रित दर्शन था। उन्होंने बालकों को देवस्वरूप मानकर ''बालदेवो भवः'' का मंत्र दिया। बालक ही देवता है, जिस प्रकार देवता को मनाने के लिए अनेक यत्न किये जाते हैं, उसी प्रकार बालक को भी यत्न पूर्वक संभालने और सम्मान देने की आवश्यकता है। इस प्रकार गिजुभाई बालक को ईश्वर की श्रेष्ठतम कृति मानते थे, और बालक को स्वतंत्र रूप से प्रस्फुटित होने देने के प्रबल पक्षधर थे। वो कहते थे–''बालक को केवल देह से मत पहचानो, अपितु आत्मा से पहचानो, उसकी आत्मा युगों पुरानी है, अनादि है, सर्वग्य है। यह आत्मा अपने विकास के निमित्त अग्रिम प्रयास के लिए नया शरीर धारण करके आई है। इसका उद्देश्य इसी के पास है, इसका फल इसी के भीतर है, जिस तरह से बीज में वृक्ष और फल विद्यमान रहते हैं। अपना मार्ग और लक्ष्य यह जानता है। इस प्रवासी को मार्ग का अनुसरण करने की प्रेरणा देना। इस प्रकार गिजुभाई बालक के प्रति प्रेम और आनन्द से ओत–प्रोत होकर सृष्टि में अव्यैक्तिक रूप से काम करने वाली ईश्वरीय शक्ति की अनुभूति करते हैं।

गिजुभाई के शैक्षिक विचार :

गिजुभाई शिक्षा को जीवन–पर्यन्त चलने वाली एक ऐसी क्रिया मानते थे, जो व्यक्ति में स्वतः, स्फूर्त होती है। जिसके चलते व्यक्ति कुछ सीखने का प्रयास करता है। उनके अनुसार–''शिक्षा जीवन व्यापी क्रिया है। इस पद्धति का उद्गम हमारे भीतर से होता है। उद्गम का मूल है अन्तरआत्मा की भूख, कोई आदमी किसी को नहीं सिखा सकता।''शिक्षा विकास है और विकास की आधरशिला है अनुभव। गिजुभाई ने तत्कालीन शिक्षा को जीवन से कटा हुआ अनुभव किया था कि शिक्षा और मानव जीवन का आपस में कोई सम्बन्ध नहीं है। वर्तमान की शिक्षा भी बालक के मस्तिष्क को सूचनाओं और पुस्तकीय जानकारी का तो भण्डार बना देती है परन्तु बालक के हृदय का स्पर्श नहीं करती है। शिक्षा कैसी होनी चाहिए इस पर गिजुभाई का स्पष्ट विचार था कि–''हमें शिक्षा को वहीं से प्रारम्भ करना होगा, जहाँ से शिक्षार्थी को सर्वप्रथम आवश्यकता है। यदि शिक्षार्थी गन्दा रहता है, गन्दे कपड़े पहन कर आता है तो उसकी शिक्षा सफाई से प्रारम्भ करें, यदि भूखा है तो भोजन से प्रारम्भ करें तथा बीमार हो तो आरोग्य से उसकी शिक्षा प्रारम्भ होनी चाहिए। यही शिक्षा का नवीन स्वरूप है।''गिजुभाई उस शिक्षा को वास्तविक शिक्षा मानते थे, जो स्वतंत्रता के माध्यम से बालक का सर्वांगीण विकास करे। उसे निर्भिक बनाए और जीवन की वर्तमान चुनौतियों का सामना करना सिखाये। गिजुभाई ने शिक्षा में स्वावलम्बन और स्वतंत्रता को प्रमुखता दी है, साथ ही बाल शिक्षा में सामुदायिक हिस्सेदारी और विद्यालय से अपनत्व की अवधारणा को सम्मिलित किया है।

निष्कर्ष :

देश के अग्रणीय बाल शिक्षाविद् गिजुभाई ने अपना सम्पूर्ण जीवन बालकों के हितों की रक्षा हेतु अर्पित किया। बाल शिक्षा के क्षेत्र में उनका योगदान अतुलनीय है। जिस बाल केन्द्रित शिक्षा का आज सारी दुनिया में गुणगान किया जा रहा है। गिजुभाई ने इसकी पद्धति खोजने के लिए अनेक प्रयोग किये।

- निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि गिजुभाई शिक्षा को स्वातंत्रय व स्वयं–स्फूर्ति के साधन के रूप में देखते हैं। उनकी दृष्टि में शिक्षा बुद्धि को स्वतंत्र, विवेकपूर्ण व तार्किक चिंतन में सक्षम एवं निर्भिक बनाने वाली शिक्षा ही सच्ची शिक्षा है।
- गिजुभाई शिक्षा के उद्देश्यों में वैयक्तिक तथा सामाजिक उद्देश्यों के मध्य समन्वय स्थापित करते हैं। वो जीवन उपयोगी उद्देश्यों को महत्वपूर्ण मानते हैं। उनके अनुसार शिक्षा के उद्देश्य अग्रांकित हैं–1–शारीरिक, 2–मानसिक, 3–बौद्धिक, 4–आत्मिक क्षमता का विकास करना, 5–व्यावसायिक दक्षता में वृद्धि करना, सामुदायिक सहभागिता का विकास करना, राष्ट्रभक्त नागरिकों का विकास करना, समता व समानता का विकास, सृजनात्मक क्षमता एवं आत्म–अभिव्यक्ति का विकास, स्वच्छता के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना तथा चारित्रिक व सामाजिक मूल्यों का विकास करना है।
- गिजुभाई के अनुसार पाठ्यक्रम निर्माण में बालकों की रूचि, रूझानों व आवश्यकताओं का ध्यान रखा जाए। पाठ्यक्रम की विषय–वस्तु एवं कार्यकलाप बालक की स्वाभाविक इच्छा तृप्ति में सहायक हो। पाठ्यक्रम क्रिया–केन्दित, श्रम में आस्था उत्पन्न करने वाला, स्वावलम्बी बनाने वाला तथा वैज्ञानि बुद्धि उत्पन्न करने वाला हो।
- शिक्षक वह धुरी है, जिसके इर्द–गिर्द बालकों का भविष्य घूमता हुआ आकार लेता है, अतः शिक्षक बालकों का मित्र, पथ–प्रदर्शक बनकर नवाचार करने के लिए सदैव तत्पर रहे। शाला में बालकों को स्वतंत्र और भयमुक्त बातावरण प्रदान करें, जिससे बालक स्वयं सीखने के लिए उत्साहित हो सकें।
- गिजुभाई की अनुशासन सम्बन्धी अवधारणा उनके अपने बाल्य–जीवन के अनुभवों, आस–पड़ोस के प्रत्यक्ष अनुभवों तथा विद्यालय के स्वानुभवों पर आधारित है। वो भय व दमन पर आधारित अनुशासन के प्रबल विरोधी थे। लालच, प्रशंसा व पुरस्कार को भी वो अनुशासन का अच्छा तरीका नहीं मानते थे। बालक के अवांछनीय व्यवहार के मूल कारण को जानकर उसका समाधान करना ही गिजुभाई की दृष्टि में व्यवहार–परिष्करण का सर्वोत्तम तरीका है। विद्यालय में बालकों को किसी भी प्रकार का दण्ड व पारितोषिक नहीं दिया जाना चाहिए।
- गिजुभाई के हृदय में बालकों के लिए असीम प्रेम था। उन्होंने बाल शिक्षा को राष्ट्रीय एजेण्डे से जोड़ने का प्रयास किया था, किन्तु खेद है कि शिक्षा के अधिकार से अभी तक 3 से 6 वर्ष तक के बच्चे वंचित हैं, क्योंकि शिक्षा के अधिकार कानून में 3 से 6 आयु वर्ग के बच्चों के हितों की बात नहीं की गई है और सरकार द्वारा चलाई गयी ''समेकित बाल–विकास परियोजना'' के तहत चलने वाली आगनबाड़ी सेवाएँ मात्र पोषाहार वितरण कार्यक्रम तक सीमित रह गयी हैं। उनमें पूर्व–प्राथमिक शिक्षा का पुट जोड़ने का सरकारी इरादा सिर्फ कागजों पर मौजूद है, जो बालकों के हितों की पूर्ति में सफल नहीं हो पा रही है, अतः बाल शिक्षा के वर्तमान परिदृश्य में बदलाव लाने की जरूरत है।

- शिक्षण अधिगम व्यवस्था शिक्षक–छात्र सम्बन्धों पर ही टिकी होती है। इस सम्बन्ध में गिजुभाई कहते हैं कि छात्र–शिक्षक सम्बन्धों का आधार उनका परस्पर प्रेम व आत्मीयता हो, डर या भय नहीं। छात्रों के मन में शिक्षक के प्रति पूर्ण निर्भयता होनी चाहिए। अगर बच्चे निर्भय न हों, स्वतंत्र और सुखी न हों तो वह अपना काम सच्चे दिल से शिक्षक को नहीं बताते, अतः शिक्षक छात्रों से लगाव पैदा कर आदर्श प्रस्तुत करें जिससे शिक्षक तथा छात्र का नाता सर्वांगसम बने ताकि उसका प्रभाव छात्र के जीवन पर पड़ सके।
- गिजुभाई विद्यालयों, महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों से अधिक जोर बाल–विद्यालयों को उत्तम बनाने पर देते थे, क्योंकि 3 से 6 वर्ष तक का यह काल बाल–विकास की दृष्टि से बड़े महत्व का माना जाता है। उसके शरीर और मन का जितना विकास इस समय होता है, उतना बाद के पूरे जीवन में नहीं होता। गिजुभाई के अनुसार–''विद्यालय बाल–विकास की एक प्रयोगशाला होनी चाहिए, जिसमें बालकों के विकास के अनुरूप सम्पूर्ण साधन–सामग्री हो। ताकि बालक स्वयं प्रयोग कर सकें और अनुभव प्राप्त कर सकें।

गिरजाशंकर भगवान् जी बधेका के शैक्षिक विचारों की उपादेयता :

शिक्षा सामाजिक परिवर्तन और विकास का महत्वपूर्ण माध्यम है। बाल–शिक्षण प्रणेता गिजुभाई शिक्षा को चतुरायामी मानते थे। यानि पाठशाला, बालक, शिक्षक तथा उनके अभिभावक या माता–पिता। इनमें से यदि एक आयाम भी कमजोर हो जाय तो शेष आयाम स्वतः ही महत्वहीन हो जाएँगे। उनका मानना है कि शिक्षा में सुधार का कार्य बाल–शिक्षा से होना चाहिए। बाल–शिक्षा से ही शिक्षा की नींव मजबूत होगी। बाल–शिक्षा के किसी भी पक्ष के कमजोर होने से बच्चों की सीखने की प्रक्रिया निरन्तर कमजोर हो जाती है, अतः भविष्य को मजबूत व उज्ज्वल बनाने के लिए आवश्यक है कि इसके आधार बाल–शिक्षा के विकास को सुनिश्चित किया जाए। गिजुभाई बच्चों की बेहतर शिक्षा और उनके सर्वांगीण विकास में शिक्षक से अधिक माता–पिता की भूमिका मानते थे। इसीलिए उन्होंने बीसवीं शताब्दी में ही शिक्षा में सामुदायिक सहभागिता को सम्मिलित कर अभिभावकों को शिक्षा के प्रति जागरूक करने का प्रयास किया, जो इक्सवीं शताब्दी में वर्तमान के ''शिक्षक–अभिभावक संगठन'' की उनकी उपादेयता को सिद्ध करता है।

शिक्षा सार्वजनिक स्थानों की सफाई के रख–रखाव, गन्दे व अस्वास्थ्यकर वातावरण में रहने के खतरों के बारे में व्यापक सार्वजनिक चेतना जाग्रत करने का माध्यम है। गिजुभाई साफ–सफाई के आग्रही थे। वो समाज में स्वच्छता के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना शिक्षा का उद्देश्य मानते थे। आजादी से पूर्व अपने समय में उन्होंने स्वच्छता अभियान चलाकर जनमानस को सफाई के प्रति जागरूक किया था, जिसे वर्तमान में ''राष्ट्रीय स्वच्छ भारत मिशन कार्यक्रम'' के नाम से चलाया जा रहा है। यह गिजुभाई की ही दूर–दृष्टि का ही परिणाम है, कि आजादी के 68 वर्ष बाद मोदी सरकार ने स्वच्छता को राष्ट्रीय एजेण्डे का हिस्सा बनाकर समाज में जन–जागृति लाने का प्रयास किया है।

वर्तमान में बाल–शिक्षा का भी व्यावसायीकरण हुआ है। गली–मोहल्ले में बाल–शिक्षा के नाम पर पब्लिक स्कूलों के बोर्ड लगे बाल–विद्यालय देखे जा सकते हैं, जो घुटन भरे दूषित वातावरण एवं अमनोवैज्ञानिक तरीके से चल रहे हैं। ये विद्याालय बालक का बचपन छीनकर उसे ज्ञान के गलियारे में बल पूर्वक धकेल रहे हैं। इन स्कूलों में शिशुओं को दाखिले के साथ ही परीक्षा, बोझिल पाठ्क्रम, भारी–भरकम बस्ते, मातृभाषा की जगह अंग्रेजी, खेल–कूद व आनन्द की जगह कड़े अनुशासन आदि विकृत्तियों का शिकार होना पड़ता है। भारतीय शिक्षा के लिए बाल–शिक्षा का यह एकांगी बोझिल एवं संवेदनहीन स्वरूप आज एक गम्भीर खतरा बन चुका है। इसमें समय रहते हस्तक्षेप करने की आवश्यकता है। इसीलिए गिजुभाई इस सन्दर्भ में माता–पिता से कहते थे–''इन जेल खानों से अपने शिशु को बचाइए।'' विद्यालय खुले, हवादार व स्वच्छ स्थान पर होने चाहिए। वर्तमान विद्यालयों को भी बालकेन्द्रित तथा बाल–मैत्रिक परिवेश का सृजन करना होगा जो गिजुभाई ने अपने बालमंन्दिर में लागू किया था ताकि विद्यालय में आकर बच्चे का घर जाने का मन ही न करे। वह सीखने के ऐसे विविध आनन्दमयी अनुभवों से गुजरे कि बालक स्वयं कहे कि हाँ मैंने यह सीख लिया है। ऐसा बदलाव भौतिक परिवेश तक ही सीमित न हो बल्कि विद्यालय में सीखने–सिखाने का आनन्दमयी माहौल मिल सके और नियमित समय–सारणी में ऐसे क्रिया–कलाप शामिल हों, जिनमें व्यक्तित्व से जुड़े सभी सहगामी पक्षों का भी सतत् विकास होता रहे।

उपर्युक्त विवेचना से स्पष्ट है कि गिजुभाई कितने दूर–दृष्टा थे और उनकी सोच कितनी दूरगामी थी। उन्होंने बाल शिक्षण में जो प्रयोग किये थे। उन्हें 20वीं शताब्दी में ही नूतन शिक्षण के रूप में हमारे समक्ष प्रस्तुत किया था, जो आज भी प्रासंगिक हैं। उपरोक्त विमर्श के सन्दर्भ में उनकी उपादेयता सिद्ध होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ–सूची :

1 बधेका, गिजुभाई, बाल–शिक्षण जैसा मैंने समझा, जयपुर, अंकित पब्लिकेशन
2 बधेका, गिजुभाई, शिक्षकों से, जयपुर, गीतांजलि पब्लिकेशन
3 बधेका, गिजुभाई, प्राथमिक विद्यालय में भाषा–शिक्षा, जयपुर, गीतांजलि पब्लिकेशन
4 बधेका, गिजुभाई, प्राथमिक विद्यालय की शिक्षण–पद्धतियाँ, जयपुर, गीतांजलि पब्लिकेशन
5 बधेका, गिजुभाई, चलते–फिरते शिक्षा, जयपुर, अंकित पब्लिकेशन
6 बधेका, गिजुभाई, दिवास्वप्न, जयपुर, गीतांजलि पब्लिकेशन
7 बधेका, गिजुभाई, माता–पिता से, जयपुर, गीतांजलि पब्लिकेशन
8 बधेका, गिजुभाई, मोंटेसरी पद्धति, जयपुर, गीतांजलि पब्लिकेशन
9 बधेका, गिजुभाई, शिक्षक हों तो, जयपुर, गीतांजलि पब्लिकेशन
10 बधेका, गिजुभाई, कथा–कहानी शास्त्र, जयपुर, अंकित पब्लिकेशन
11 चौबे, सरयू प्रसाद, (1975), भारतीय शिक्षा दर्शन, दिल्ली, द मैकमिलन कम्पनी ऑफ इण्डिया लि.
12 चौबे, सरयू प्रसाद, (1983), हमारी शिक्षा समस्याएँ, आगरा, विनोद पुस्तक मन्दिर